Vol 5 Issue 1 July 2015 ISSN No :2231-5063

# International Multidisciplinary Research Journal

# Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

**Welcome to GRT**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.in**

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 1 | July - 2015

# हिन्दी लघुकथा साहित्य में मानवतावाद का स्वर

अर्चना झा

**सारांश :**

''समस्त मध्यकाल में निखिल सृष्टि और इतिहास क्रम का नियंता, किसी मानवोपरि अलौकिक सत्ता को माना जाता था। समस्त मूल्यों का वही केन्द्रीय आधर था और मनुष्य की एक मात्र सार्थकता यही थी कि वह अधिक से अधिक उस सत्ता से तादात्म्य स्थापित करने की चेष्टा करे। इतिहास या काल-प्रवाह एसी मानवोपरिसत्ता की सृष्टि का माया रूप में या लीला रूप में''।

**Short Profile**

Archana Jha is Head of Department ( Hindi ) at Shri Shankaracharya College, Junwani Bhilai.

**प्रस्तावना :**

हम ज्यों-ज्यों आधुनिक युग में प्रवेश करते गये, त्यों-त्यों इस मानवोपरि सत्ता का अवमूल्यन होता गया। निर्माण और विकास का केन्द्र मनुष्य हैं। मानववादी दृष्टि के विकास के साथ ही न तो मानवपरिसत्ता के प्रति विश्वास शेष रहा और न उस सत्ता को मानने वाले प्रतिनिधियों पर आस्था, क्योंकि लोग यह विश्वास करने लगे है कि सम्पूर्ण मानव मूल्यों का विधयाक मनुष्य ही हैं। हृदय में स्थित आत्मा कोई प्राकृतिक सत्ता या ईश्वरीय अवतारणा का पर्याय नही है। आत्मा हमारी संवेदना भूमि हैं। मनुष्य के प्रति आकर्षण होने और उसके आत्मसम्मान की रक्षा करने से हमारी आत्मा जागरूक हो जाती हैं। इसी आत्मा के जागरूक रूप को चित्रण अनेक लघुकथाकारों ने किया।

**'अशोक भाटिया' की लघुकथा 'भूख' में मानवता का चित्रण हैं-**

रेलगाड़ी में एक आदमी भीख माँग रहा था। एक आदमी ने आसपास देखा और जेब से अठन्नी निकालकर आगे बढ़ा दी 'भाई, चवन्नी वापस कर दो।

लोग देखने लगे-कितना अमीर है, कितना महान है। चवन्नी दान दे दी।

x x x x x

एक आदमी खाना खाने लगा था। उसने कहा, बाबा! मेरे पास रोटी है। तुम्हें भूख लगी होगी। आओं हम मिलकर खाना खा लेते हैं।

भिखारी सहम गया। पहली बार किसी ने ऐसा कहा था। उस आदमी ने फिर से कहा, तो लोग सोचने लगे, साला बेवकूफ है। भिखारी के पास बिठाये गा। xxx भिखारी बड़ी मुश्किल से नजदीक आया। उस आदमी ने लाठी पकड़कर उसे सामने बिठा लिया। भिखारी की आँखे भीख गयी थी। संकोच में उसने थोड़ा सा खाना खाया और उठने लगा।

बस बाबा, भूख मिट गयी? उस आदमी ने पूछा-

'बेटा सच कहूँ सारी भूख मिट गयी है। मुझे आज तक किसी ने इतना नही दिया, जितना तूने थोड़ी देर में दे दिया है।

मानवतावाद के संबंध में 'कोर्लिस ले माउण्ट' ने ''बीसवी शताब्दी के मानववाद को, सम्पूर्ण मानवता के सर्वाधिक कल्याण की इस प्रकृत विश्व में बौद्धिक और प्रजातांत्रिक पद्धति पर आनन्दपूर्ण सेवा-दर्शन कहा है।''[३]

यह मानवतावाद परिकल्पना हमें नई आस्था नही देती वरन् उस आस्था की सक्रियता के लिए निरापद भी प्रदान करती हैं।

आज का मानव नया हैं वह समानुपाती एवं सामाजिक संस्कृति के परिवेश में पला हैं। वह अपने अन्दर यथार्थ का शोधी तथा संघर्ष का केन्द्र है। उसकी चेतना में भारतीय-अभारतीय, अतीत, वर्तमान की दूरी नही है। वह अनेक संभावनाओं से भरा हुआ है। उसे मनुष्य की चिंता का रचनात्मक

विभागाध्यक्ष (हिन्दी) ,श्री शंकराचार्य महाविद्यालय ,जुनवानी भिलाई.

उपयोग आज का सर्वाधिक संघर्ष और नैतिक संकट है। नये मानव के प्रति आस्था का कारण विज्ञान है। रूढ़ीग्रस्त चेतना से युक्त मानव मूल्य के रूप में स्वातंत्र्य के प्रति सजग अपने भितर अनारोपित सामाजिक दायित्वों को स्वयं अनुभव करने वाला समाज को समस्त मानव के हित में विरत, मानवमात्र के प्रति स्वभाविक सह-अनुभूति से युक्त, संकीर्णताओं एवं कृत्रिम विभाजनों के प्रति क्षोभ का अनुभव करने वाला, हर मनुष्य को जन्मतः समान मानने वाला, मानव व्यक्तित्व को उपेक्षित निरर्थक और नगण्य सिद्ध करने वाला किसी भी दैविक शक्ति या राजनैतिक सत्ता के आगे अनवरत, प्रत्यके व्यक्ति के स्वाभिमान के प्रति सजग दृढ़ एवं संगठित अन्तःकरण से युक्त, सक्रिय किन्तु अपीड़क, सत्यानिष्ठ तथा विवेक सम्पन्न होगा।

आज मनुष्य ने अपनी असिम शक्ति का परिचय देकर यह सिद्ध किया है। कि वह सबसे बड़ा व महान है। संप्रदाय विशेष की शक्ति का वाहक न होकर समष्टि की शक्ति का वाहक है। वह संसार के अन्य सभी व्यक्तियों में अपनापा की खोज करता है यह अपनापा और कुछ नही, एक ऐसे सत्य की खोज में है, जो प्रत्येक मनुष्य के आलोक में है। वह अपनापा की रक्षा करने में कुशल है किन्तु समाज का विघटन उसका अभिष्ठ नही। लघुकथाकारों ने आज देशों में, भाषाओं में, वर्ग में बँटी दुनिया के आदमियों पर अनेक कथाएँ रची। राजगोपाल सिंह की 'हल'[४] तथा आलोक यात्री की 'नक्शा'[५] दोनों कथाकारों ने कथा के माध्यम से विश्व एकता पर बल दिया है। उनके अनुसार 'आदमी के टुकड़े जोड़ दो, दुनिया के टुकड़े स्वतः जुड़ जायेंगे'।

मानवता पर व्यंग्य करती हुई अनेक कथाएँ रची गई। जिससे आदमियता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है उदहारणस्वरूप भीखी प्रसाद विरेन्द्र की लघुकथा 'दुश्मन'[६] दृष्टव्य है इनके अनुसार आज मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन मनुष्य ही है।

''क्यों हथियार बना रहे है आप?
आत्मरक्षा के लिए!
किससे
दुश्मन से
कौन है आपका दुश्मन?
आदमी
आप कौन है?
आदमी

इसी तथ्य का चित्रण आलोक शर्मा भारतीय ने अपनी लघुकथा 'आदमी' में किया है। उनके अनुसार सबसे जहरीला 'इन्सान' ही है।

'शिक्षक' ने सामान्य ज्ञान की कक्षा में बच्चों से पूछा, ''अच्छा बच्चों बताओं, सबसे जहरीला जानवर कौन सा होता है?

'साँप' एक बच्चें ने तत्काल जवाब दिया।

x x x x x

लक्ष्मण तुम बताओं! शिक्षक ने पूछा, क्या साँप के काटने पर आदमी मर जाता है.....?
नही.....? लक्ष्मण ने जवाब दिया।

x x x x x

इसलिए की अब साँप में जहर नही होता.....।
फिर किसमें होता है.....?
आदमी में .....!
वह कैसे?
मेरी माँ को एक आदमी ने काट खाया था.....
जिससे वह उसी समय मर गयी। लक्ष्मण सूरज सा लाल हो उठा।''

x x x x x

अतः 'दुश्मन' और 'आदमी' लघुकथा के अनुसार समाज में मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु मनुष्य ही है। इन मनुष्यों से अच्छे तो जानवर हैं। यश खन्ना 'नीर' ने अपनी लघुकथा 'सोच' में मानवता पर व्यंग्य किया। आज समाज में बढ़ते साम्प्रदायिक दंगो के कारण इन्सान-इन्सान के खून का प्यासा है वहीं दुकान में बंद एक मुर्गा अपने दुश्मन इन्सान की लम्बी उम्र के लिए दुआ मांग रहा है।

x x x x x

छी.....भूपिंदर सिंह 'अश्ट' ने 'जाति'[९] उन मनुष्यों का चित्रण किया जो एक असहाय इंसान की सहायता करने से कतराते हैं-

एक आदमी को ट्रक कुचल कर चली गयी। कुछ नौजवान उसके पास पहुंचे पानी के छीटें मारे किन्तु उनमें से एक ने कहा कि हमें क्या लेना है पुलिस उल्टा केस बना देगी और उसे वहीं छोड़कर चले गये। जिसकी बाद में मृत्यु हो जाती है। ठीक इसके विपरित 'अश्ट' ने 'मुहब्बत'[१०] लघुकथा में बटेर व आदमी के मध्य अंतर बताया है 'एक शिकारी की बंदूक से घायल बटेर गिर पड़ता है। उसके सभी साथी उसे उठाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाते हैं और जब उसे होश आता है तो उसके मुँह में

अपने आप निकला- "मैं आदमी की जात में नहीं हूँ।

इन दोनों कथाओं के अनुसार इंसान से अच्छी पक्षियों की कौम है जिसमें आपस में सहयोग की भावना अभी तक कायम है।

समाज में मानवता जिन्दा रही नहीं ऐसा सोचना गलत है आज भी कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो दूसरों की मुसीबत के समय निस्वार्थ भाव से सहायता प्रदान कर मानवता को जिन्दा रख रहे हैं। श्रेष्ठ लघुकथाकार 'विक्रम सोनी' ने 'परम-पिता'[११] लघुकथा में इसी भाव को चित्रित किया।

'पिछले पन्द्रह मिनिट की बूँदा-बांदी से बचने के लिए मैं सघन पेड़ के नीचे सायकल थामे खड़ा था। ...ग्ग स कुछ नहीं तो आठ एक माह के पेट से तो होगी ही 'हे भगवान!' महिला के मुख से दर्द भरी चीख निकली। एक याचना भरा स्वर फूटा lXXXlXXXlXXXl उसने उसे बिना सोचे-समझे उठाया और पास के नर्सिंग होम ले गया। उस समय उसके पास पैसे नहीं थे। वह घर से पैसे लेकर अस्पताल गया सग्ग्स महिला के चेहरे पर असीम सुखानुभूति थीlXXXlउसे लड़का हुआ था। जो मुझसे कह रहा हो।

धन्यवाद, परमपिता धन्यवाद।"

एक अच्छे मानव का चित्रण 'बलराम' ने अपनी लघुकथा 'अपने लोग'[१२] में किया है। एक व्यक्ति को प्लाट के रजिस्ट्रेशन के लिए दो हजार रूपये जमा करने थे किन्तु उसे दो सौ रूपये कम पड़ रहे थे lXXXlXXXXXXl

किन्तु सभी मित्रों ने कोई न कोई बहाना बनाकर उसे टाल गये। अन्त में हारकर निराश हो वह घर में बैठा रहता है उसे इस तरह बैठा देख बगल का पड़ोसी किराएदार परेशानी का कारण पूछता है और अन्त में आज ही मिली पूरी पगार निकालकर उसके सामने रख दी और बोला 'जितना चाहिए रख लो।'

बलराम ने अंतिम दो पंक्तियों में एक आदर्श मानव चरित्र का चित्रण किया है। अगर इस मानव का अन्य लोग अनुसरण करे तो एक आदर्श समाज का निर्माण या आदर्श समाज बनाने की कोशिश तो की जा सकती है और इस आदर्श समाज में बेईमानी, भ्रष्टाचार, अपराध आदि भावनाओं की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। यही भावनाऐं मानवता का नाश करने में सहायक होती है। डॉ. शंकर पुण्तांबेकर की लघुकथा 'आश्चर्यजनक'[१३] दृष्टव्य है। -

'गरीबी उसके यहां जमकर बैठी हुई थी। हिलने का नाम ही नहीं ले रही थी lXXXlकड़ी से कड़ी मेहनत की उसने खून-पसीना एक कर दिया। तब भी वह थी कि टस से मस नहीं हो रही थी।

एक दिन उसने अपने इष्ट मित्रों की सलाह पर तथा गरीबी से त्रस्त आकर ईमानदारी छोड़ बेईमानी को बुला ही लिया और बेईमानी जब आयी और गरीबी के चीथड़े खींचकर उसे बाहर निकालने लगी और इधर वह एकदम चौक गया। उसने देखा "अरे उन चीखड़ों के नीचे गरीबी नहीं, यह तो मनावता है।"

मुकेश जैन 'पारस' ने लघुकथा 'युग के विपरित'[१४] का अधिकारी पात्र समीर को उसकी योग्यता के आधार पर अपनी नौकरी की परवाह किये बिना उसे देता है

अधिकारी ने फिर बोलना शुरू किया, 'मगर उसके पास केवल सिफारिश ही थी। तुम्हारें सामने उसकी योग्यता कुछ भी नहीं थी। लिहाजा यह नौकरी तुम्हें दी जाती है।'

चन्द्र मोहन प्रधान ने 'आधुनिक लोकतंत्र'[१५] नामक लघुकथा में स्वतंत्रता के पहले व बाद का चित्रण किया है। उसमें उन्होंने प्रथम भाग में मानवता का चित्रण तथा द्वितीय भाग में यानि स्वतंत्रता के बाद में मानवता पर व्यंग्य किया।

बात आजादी के पहले की है एक अनाज के बोरे में लदी बैलगाड़ी का एक पहिया सड़क के किनारे कीचड़ में फँस गया lXXXlXXXl एक अंग्रेज नीचे उतर कर आया - "वेल यह क्यों खड़ा है?"
हजूर माई बाप! पहिया कीचड़ में .....?
अंग्रेज ने फँसे पहिये की ओर जाकर देखा lXXXl"चलो निकालो।"
अंग्रेज ने आस्तीन समेटी, और पहिये पर जुट गया lXXXlXXXlगाड़ी एक झटके से बाहर सग्ग्सबाजार से कुछ लपके आए "अबे साले, तेरी गाड़ी में खुद कलेक्टर ने हाथ लगा दिया।
'कलेक्टर' गाड़ीवान आसमान से गिरा।
वह जमाना अंग्रेजों का था

X X X X

अभी कुछ समय पहले की बात है। चुनावों के दौरान, शहर में नेताओं को लादे कार दौड़ रही थी, भीड़-भाड़ में ईंटों से लदी बैलगाड़ी के पीछे मंथर गति से बढ़ती कार में बैठे नेता का धैर्य खत्म होने लगा और कहा अरे सूअर! गाड़ी हटा सामने से। "हुजूर दो मिनट सबर करें, आगे भीड़ है अभी बगल

करता हूँ इतने में ही गुस्से से लाल मंत्री नीचे उतरे और उसे मारने के लिए तैयार हो गये। लोकतंत्र जो हैं।"

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हम ज्यों-ज्यों आधुनिक युग में प्रवेश करते गये त्यों-त्यों इस मानवतावादी दृष्टिकोण का अमूल्यन होता जा रहा है और इस दृष्टिकोण के निर्माण और विकास का केन्द्र मनुष्य ही है। आज का मानव क्या है। वह समानुपाती एवम् सामाजिक संस्कृति के परिवेश में पला है। वह अपने अंतः यर्थाथ का शोधी तथा संघर्ष के केन्द्र है। समुचे समाज में लोभ, अधर्म व पाप फैला हुआ है जिससे समाज भ्रष्ट हो चुका है और जिसका फल मनुष्यों को दुःख असंतोष व भय ही मिला है। और जिन व्यक्तियों ने इसमें बदलाव लाना चाहा उन्हें दुख व निराशा ही हाथ लगी है। आज का कथाकार नैतिक, दार्शनिक मूल्यों की नियति से पीछा छुड़ाकर नहीं भागता वरन् इन सब से अपने सौन्दर्य संवेदन की वृद्धि कर समाज का ध्यान इस ओर दिलाता है। लघु कथाकारों ने जहाँ मानवतावादी दृष्टिकोण रखने वाले आदर्श व्यक्तियों का चित्रण किया वही उन्होंने मानवता पर व्यंग्य करती हुए अनेक लघुकथाऐं लिखीं। हम ज्यों-ज्यों आधुनिक युग में प्रवेश करते गये त्यों-त्यों मानवतावादी दृष्टिकोण का अमूल्यन होता जा रहा है। समूचे समाज में लोभ, अधर्म व पाप फैला हुआ है। जिससे समाज भ्रष्ट हो चुका है और जिसका फल मनुष्यों को दुःख, असंतोष, असुरक्षा व भय ही मिला है। जिन व्यक्तियों में इनमें बदलाव लाना चाहा उन्हें दुख व निराशा हाथ लगी।

## संदर्भ ग्रंथ–


१.लेखक धर्मवीर भारती, मानवमूल्य और साहित्य, धर्मभारती, पृ. २४

२.सम्पादक- कुमार नरेन्द्र, साँझा हाशिया, अशोक भाटिया, पृ. २६

३.कोर्लिस ले माउण्ट, ''हयूमानिज्म ऐजए फिलोसोफी, कोर्लिस ले माउण्ट पृ. २७३

४.संपादक - विक्रम सोनी, लघुकथा (त्रैमा.प.) अक्टूबर-दिसम्बर-८५, राजगोपाल सिंह पृ.३४

५.संपादक - सतीश राठी, तीसरा क्षितिज, आलोक यात्री पृ. ३४

६.संपादक - सतीश राठी व अनन्त श्रीमाली, क्षितिज, भीखी प्रसाद, वीरेन्द्र पृ. ५२

७.संपादक - कुमार नरेन्द्र, साँझा हाशिया, अशोक शर्मा भारती पृ. ३५

८.संपादक - विक्रम सोनी, लावा, यशखन्ना नीर, पृ. ३८

९.संपादक - विाम सोनी लघुकथा (त्रै.प.) जुलाई-८६ से मार्च -८७ तक, भूपिन्दर सिंह पृ. ३२

१०.संपादक - विक्रम सोनी, लावा, भूपिन्दर सिंह, पृ. ४०

११.संपादक - विक्रम सोनी, लावा, भूपिन्दर सिंह, विक्रम सोनी पृ. ५०

१२.लेखक - बलराम, मृगजल, बलराम, पृ. १९

१३.संपादक - सतीशराज पुष्करणा आज के प्रतिबिम्ब, शंकर प्रणताबेकर पृ.५९

१४.संपादक - कुमार नरेन्द्र, साँझा हाशिया, मुकेश जैन पारस, पृ. ५०

१५.संपादिका - शमीम शर्मा, हस्ताक्षर, चन्द्र मोहन प्रधान, पृ. ९४-९५


## अन्य लघुकथा संग्रहः–


१.लेखक - डॉ. श्याम सुन्दर दीप्ति, बैर हाजिर रिश्ता।

२.लेखक - मनोज सेवलकर, मकड़जाल

३.लेखक - मुकेश शर्मा, लघुकथा के आयाम

४.संपादक - डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, शोध दिशा लघुकथा विशेषांक।

*अर्चना झा*
*विभागाध्यक्ष (हिन्दी) ,श्री शंकराचार्य महाविद्यालय ,जुनवानी भिलाई.*

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.in